ये अव्यक्त इशारे

सच्चे दिल से साहेब राज़ी कर परमात्म दिलतख्त नशीन बनो

14-12-2022

साहेब को राज़ी करने के लिए दिल की स्वच्छता चाहिए, इसलिए कहते हैं सच्चाई ही सफाई है। अपने स्व-उन्नति अर्थ जो भी पुरुषार्थ है, जैसा भी पुरुषार्थ है, वह सच्चाई से बाप के आगे रखना, यह है स्वयं के पुरुषार्थ की स्वच्छता। दूसरा – सेवा करते सच्ची दिल से कहां तक सेवा कर रहे हैं, उसकी स्वच्छता। अगर कोई भी स्वार्थ से सेवा करते हो तो उसको सच्ची सेवा नहीं कहेंगे। इतने मेले कर लिये, इतने कोर्स करा लिये लेकिन स्वच्छता और पवित्रता की परसेन्ट कितनी रही ? ड्यूटी नहीं है लेकिन सेवा निजी संस्कार है, स्व-धर्म है, स्व-कर्म है।

Imbibe honesty and cleanliness and please the true Lord

In order to please the Lord, you need cleanliness of the heart. This is why it is said: Honesty is cleanliness. Whatever effort you make for your self-progress, whatever effort you make, keep that in front of the Father with honesty. This is the cleanliness of your personal effort. While doing service, check to what extent you are doing service with an honest heart, to have that cleanliness. If you do service with any selfish motive, that will not be counted as true service. You did so many melas, you gave the course to so many, but what was the percentage of cleanliness and purity? It is not a duty, but service is your true nature, is your original dharma and original karma.